है तो । असल में तो हमें हिन्दुस्तानी बनना चाहिये । कहीं मेरी बात को तोड़ न डालिये । मैं खाली अपनी बात को समझाने के लिए कह रहा हूं कि दुनिया के स्तर पर अगर रूसी और अमरीकी बटखरों का ही इस्तेमाल करना है तो अन्दुरूनी स्तर पर रूसी बनिये और बाहरी स्तर पर अमरीकी । अपनी आर्थिक बुनियाद समाजवाद के आधार पर डालिये, फिजुल-खर्ची को खत्म कीजिये, जो आपस में गैर-बराबरी है उसको खत्म कीजिये, जो पैसा बचे उससे खेती और कारखाने सुधारिये और जब ताकत बन जाएगी उसके बाद विदेशी नीति में भी कुछ हुनर और कुछ चमत्कार आप दिखा सकेंगे । इस वास्ते अन्दरूनी मामलों में रूसी और बाहरी मामलों में अमरीकी । आर्थिक मामलों में रूसी राजकीय मामलो में अमरीकी । मोटे तौर से अगर आपने इस बुनियाद को अख्तियार किया तो विदेश नीति भी आपकी सफल हो सकेगी ।

इस सम्बन्ध में मैं यह भी कहना चाहता हूं कि अभी हाल ही में जो दक्षिण में एक पड़ोसी देश में चुनाव हुआ है, उसके बाद श्री डडले सेनानायके ने जो बयान दिया और उस बयान की तरफ आपका ध्यान जाना चाहिये । विदेश मंत्री जी, हो सकता है कि कुछ छोटी कसौटियां सीलोन के अन्दर इस्तेमाल की जायें तो कुछ तथाकथित प्रगतिशील लोग कहें कि डडले साहब कहां से जीत गये । लेकिन याद करो डडले साहब ने आते ही सीलोन को हिन्दुस्तान के साथ जोड़ा है और चीन के खिलाफ । इस लिए विदेशी मामलों में कोई भी फैसला करते वक्त समझना चाहिये कि यह दुनिया पेंच वाली है, इस में कई कसौटियां है, सिर्फ एक कसौटी के इस्तेमाल से काम नहीं चला करता है । अगर एक ही कसौटी इस्तेमाल कर लोगे तो फिर दुनिया के गलत रास्तों पर चले जाने की आशंका है । मैं दोहराये देता हूं । एक पुराने जमाने में बहुत से प्रगतिशील लोग हिटलर जर्मनी को सन्तुष्ट करने के लिए गलत रास्ते पर चले गये थे, उसी तरह से आज भी पीकिंग चीन को सन्तुष्ट करने के लिए बहुत से लोग गलत रास्ते पर जा सकते हैं । लेकिन आप चोट खाये हुए हैं और अपनी जमीन खोये हुए हैं और आपको तो कम से कम मेहरबानी करके दुनिया को बताना है कि पेकिंग चीन का स्वरूप क्या है । इसलिए कभी भी एक काम मत करो, एक बात मत बोलो जिससे चीन का फायदा होता हो । एक मत करो, एक बात मत बोलो जिससे दक्षिण एशिया में अमरीका का पलड़ा घटता हो । इतना ही मैं कहना चाहता था ।

18.06 hrs.

ARREST OF MEMBER

SHRI DASARATHA DEB

Mr. Deputy-Speaker: I have to inform the House that the Speaker has received the following telegram, dated the 31st March, 1965, from the Administrator, Tripura:—

"I have the honour to inform you that I have found it my duty in exercise of the powers under Rule 30 of the Defence of India Rules, 1962, read with sub-rule (11) of Rule 2 of the aforesaid Rules and all other powers enabling me in that behalf to direct that Shri Dasaratha Deb, Member, Lok Sabha, be detained until further orders, with a view to preventing him from acting in any manner prejudicial to the defence of India and civil defence, the public safety, the maintenance of public order, India's relations with foreign powers, the maintenance of peaceful conditions in Tripura and the maintenance of supplies and

[Mr. Deputy-Speaker]

services essential to the life of the community.

Shri Dasaratha Deb, was, accordingly, taken into custody at 22.30 hours on the 30th March, 1965 and was lodged in the Central Jail, Agartala."

Some hon. Members: Shame;

18.07 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, April, 1, 1965/Chaitra 11, 1887 (Saka).

GMGIPND—LSII—21(Ai)LSD—4-5-65—970.